Vigyan Important Questions Class 9 Chapter 12 Khadya Sansadhano Me Sudhar UP Board

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न:

प्रश्न 1.
श्वेत क्रान्ति का क्या उद्देश्य था?
उत्तर:
दूध उत्पादन में वृद्धि।

प्रश्न 2.
चारा देने वाली फसलों के नाम लिखिए।
उत्तर:
वर्सीम, जई, सूडान आदि चारा देने वाली फसलें हैं।

प्रश्न 3.
खरीफ की फसल का समय कब होता है ?
उत्तर:
जून से आरम्भ होकर अक्टूबर मास तक।

प्रश्न 4.
रबी की फसल कब उगाई जाती है ?
उत्तर:
रबी की फसल नवम्बर से अप्रैल मास तक होती है।

प्रश्न 5.
रबी की फसलें कौन-कौन सी हैं ?
उत्तर:
गेहूँ, चना, मटर, सरसों तथा अलसी आदि रबी की फसलें हैं।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 6.
खरीफ की फसलें कौन - कौन सी हैं?
उत्तर:
धान, सोयाबीन, अरहर, मक्का, मूँग तथा उड़द आदि खरीफ की फसलें हैं।

प्रश्न 7.
अधिक रोग प्रतिरोधकता वाली गाय की दो देशी किस्मों के नाम बताओ।
उत्तर:
रेडसिंधी और साहीवाल।

प्रंश्न 8.
फसल की किस्मों में ऐच्छिक गुण किस विधि द्वारा डाले जाते हैं ?
उत्तर:
संकरण विधि द्वारा।

प्रश्न 9.
उच्च उत्पादन का निर्धारण क्या है ?
उत्तर:
प्रति एकड़ फसल की उत्पादकता को बढ़ाना उच्च उत्पादन है।

प्रश्न 10.
अजैविक प्रतिरोधकता से क्या आशय है ?
उत्तर:
सूखा, क्षारता, जलाक्रान्ति, गरमी, ठण्ड तथा पाला के प्रति प्रतिरोधकता अजैविक प्रतिरोधकता है।

प्रश्न 11.
सस्य विज्ञान वाली किस्में किसमें सहायक हैं?
उत्तर:
अधिक उत्पादंन में।

प्रश्न 12.
उत्पादन प्रणालियाँ किन तीन प्रकारों की होती हैं ?
उत्तर:

1. खर्च रहित उत्पादन प्रणाली
2. कम खर्च उत्पादन प्रणाली
3. अधिक खर्च उत्पादन प्रणाली।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 13.
पौधे अपने पोषण के लिए पोषक तत्व कहाँ से प्राप्त करते हैं ?
उत्तर:
पौधे हवा से ऑक्सीजन, कार्बन, पानी से हाइड्रोजन व ऑक्सीजन तथा मिट्टी से 13 पोषक तत्व प्राप्त करते हैं।

प्रश्न 14.
वृहत् पोषक किसे कहते हैं ?
उत्तर:
पौधों को पोषकों के लिए जो पोषक अधिक मात्रा में चाहिए, उन्हें वृहत् पोषक कहते हैं।

प्रश्न 15.
सूक्ष्म पोषक किसे कहते हैं ?
उत्तर:
पौधों को पोषण के लिए जो पोषक कम मात्रा में चाहिए, उन्हें सूक्ष्म पोषक कहते हैं।

प्रश्न 16.
वृहत् पोषक कौन-कौन से हैं ? नाम लिखिए।
उत्तर:
नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, पोटैशियम, कैल्सियम, मैग्नीशियम एवं सल्फर।

प्रश्न 17.
सूक्ष्म पोषक कौन-कौन से हैं ? नाम लिखिए।
उत्तर:
आयरन, मैंग्नीज, बोरॉन, जिंक, कॉपर, मॉलिब्डेनम एवं क्लोरीन।

प्रश्न 18.
खाद कैसे तैयार की जाती है ?
उत्तर:
खाद जन्तुओं के अपशिष्ट तथा पौधे के कचरे के अपघटन से तैयार की जाती है।

प्रश्न 19.
वर्मी कम्पोस्ट क्या है ?
उत्तर:
केंचुए के उपयोग से तैयार कम्पोस्ट (खाद) को वर्मी कम्पोस्ट कहते हैं।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 20.
हरी खाद क्या है ?
उत्तर:
फसल उगाने से पहले, पटसन, मूँग, ज्वार आदि को उगाकर उन्हें हल की सहायता से खेत की मिट्टी में मिला देते हैं, यही हरी खाद है।

प्रश्न 21.
अंतराफसलीकरण में उपयोगी दो फसल समूह के नाम लिखिए।
उत्तर:

1. सोयाबीन + मक्का
2. बाजरा + लोबिया।

प्रश्न 22.
खरपतवार के तीन पादपों के नाम लिखिए।
उत्तर:

1. गोखरू (जैंथियम)
2. गाजर घास (पारथेनियम)
3. मोथा (साइरेनस रोटेंडस)।

प्रश्न 23.
भण्डारण से पूर्व उत्पादन को किस प्रकार उपचारित करना चाहिए ?
उत्तर:
भण्डारण से पूर्व उत्पाद की सफाई करके उसे धूप व छाया में सुखाना चाहिए तथा धूमक का उपयोग करना चाहिए।

प्रश्न 24.
पशुपालन किसे कहते हैं ?
उत्तर:
पशुधन के प्रबंधन को पशुपालन कहते हैं।

प्रश्न 25.
पशुपालन में क्या आवश्यक कार्य करने होते हैं ?
उत्तर:
इसके अन्तर्गत भोजन देना, प्रजनन तथा रोगों पर नियंत्रण करना आदि कार्य सम्पन्न करने पड़ते हैं।

प्रश्न 26.
पशु कृषि में पशुपालन के दो उद्देश्य क्या हैं ?
उत्तर:

1. दूध देने वाले पशु पालना
2. कृषि कार्य के लिए पशुपालन।

प्रश्न 27.
लम्बे समय तक दूध स्रवण काल के लिए विदेशी नस्लें कौन-कौन सी हैं ? किन्हीं दो के नाम लिखिए।
उत्तर:
जर्सी एवं ब्राउन स्विस।

प्रश्न 28.
पशुओं के यकृत में कौनसा परजीवी पाया जाता है ?
उत्तर:
पर्णकृमि (फ्लूक)।

प्रश्न 29.
समुद्री जल में संवर्धित मछलियों के नाम लिखिए।
उत्तर:
मुलेट, भेटकी, पर्लस्पॉट (पंखयुक्त मछलियाँ)।

प्रश्न 30.
भोजन से हमें क्या प्राप्त होता है ?
उत्तर:
भोजन से हमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन एवं खनिज लवण प्राप्त होते हैं।

प्रश्न 31.
'मेरीकल्चर' किसे कहते हैं ?
उत्तर:
आर्थिक महत्त्व की समुद्री मछलियों का समुद्री जल में संवर्धन मेरीकल्चर कहलाता है।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 32.
छत्ते से प्राप्त 'मोम' की क्या उपयोगिता है ?
उत्तर:
छत्ते से प्राप्त मोम का उपयोग औषधि तैयार करने में किया जाता है।

प्रश्न 33.
'मोती प्राप्त करने के लिए किसका संवर्धन किया जाता है ?
उत्तर:
ऑएस्टर का संवर्धन मोतियों को प्राप्त करने के लिए किया जाता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न:

प्रश्न 1.
फसलें और पशुधन के उत्पादन की क्षमता बढ़ाना क्यों आवश्यक हो गया है?
उत्तर:
भारत एक बड़ी जनसंख्या वाला देश है और जनसंख्या सौ करोड़ से भी अधिक हो गई है। इस जनसंख्या को खाद्यान्न आपूर्ति करने में प्रतिवर्ष पच्चीस करोड़ टन से भी अधिक खाद्यान्न की आवश्यकता होती है। यह तभी सम्भव है जब अधिक भूमि पर खेती की जाए। लेकिन हमारे देश में जितनी भूमि पर कृषि हो रही है, उसको और अधिक बढ़ाना सम्भव नहीं है। अत: यह आवश्यक हो गया है कि फसलें और पशुधन दोनों के उत्पादन की क्षमता बढ़ाई जाए।

प्रश्न 2.
दीप्तिकाल क्या है? इस आधार पर वर्ष में फसलों का निर्धारण कैसे किया गया है?
उत्तर:
दीप्तिकाल:
दीप्तिकाल सूर्य प्रकाश के काल से सम्बन्धित होता है। वर्षभर में मौसम परिवर्तन सूर्य के प्रकाश के तापक्रम से होता है। इसी आधार पर पौधों में पुष्पन तथा वृद्धि होती है। कुछ पादपों को पुष्पन में कम तापक्रम आवश्यक है, तो कुछ को अधिक, इसी आधार पर वर्ष में दो फसलों का निर्धारण किया गया है

(i) खरीफ की फसल: यह वर्षा ऋतु की फसल है, जो जून से प्रारम्भ होकर अक्टूबर तक होती है। इसमें धान, सोयांबीन, अरहर, मक्का, मूँग तथा उड़द आदि की खेती की जाती है।

(ii) रबी की फसल: यह शीत ऋतु की फसल है। यह नवम्बर से अप्रैल मास तक होती है। इसमें गेहूँ, चना, मटर, सरसों तथा अलसी आदि की खेती की जाती है।

प्रश्न 3.
संकरण क्या है? यह कितने प्रकार का होता है?
उत्तर:

संकरण: विभिन्न आनुवंशिक गुणों के पौधों में क्रॉसिंग की क्रिया को संकरण कहते हैं। इस विधि द्वारा किसी फसल के लिए उच्च उपज वाली किस्म उत्पन्न करने के लिए फसल की दो ऐसी किस्मों का चयन करते हैं, जिनमें प्रत्येक में कम से कम एक वांछित गुण अवश्य हो, जैसे एक किस्म उच्च उपज देने वाली है और दूसरी रोगों के लिए प्रतिरोधक। संकरण तीन प्रकार का होता है।

1. अंतराकिस्मीय (विभिन्न किस्मों में)
2. अंतरावंशीय (विभिन्न जेनरा में)
3. अंतरास्पीशीज (एक ही जीनस की दो भिन्न स्पीशीजों में)।

प्रश्न 4.
अच्छे उत्पादन हेतु हमें किस प्रकार के बीज का उपयोग करना चाहिए?
उत्तर:
अच्छे उत्पादन के लिए कृषक को बीज में निम्न गुण देखने चाहिए।

1. किसानों को अच्छी गुणवत्ता वाले विशेष बीज का उपयोग करना चाहिए, जो उस क्षेत्र विशेष में अनुकूल परिस्थितियों में अंकुरित हो सके।
2. फसल उत्पादन मौसम व मिट्टी की गुणवत्ता तथा पानी की उपलब्धता पर निर्भर है अतः बीज की ऐसी किस्म हो, जो विविध जलवायु परिस्थिति में भी उग सके।
3. बीज में ऐसी विशेषता होनी चाहिए जो उच्च लवणीय मिट्टी में भी अंकुरित हो सके।

प्रश्न 5.
फसल सुधार के लिए उन्नत किसमें कैसी होनी चाहिए?
उत्तर:
फसल सुधार के लिए उन्नत किस्मों के लिए फसल उत्पाद की गुणवत्ता प्रत्येक फसल में अलग - अलग होती है। जैसे - दालों के उत्पादन में देखा जाए उनमें प्रोटीन की गुणवत्ता उच्च होनी चाहिए। यदि तिलहन है, तो तेल की गुणवत्ता देखते हैं तथा फल व सब्जियों में विटामिन व खनिज लवण की उपस्थिति के साथ उसमें संरक्षण की भी विशेषता होनी चाहिए।

प्रश्न 6.
फसल सुधार की प्रक्रिया में 'परिपक्वन काल में परिवर्तन' की क्या आवश्यकता है?
उत्तर:
परिपक्वन काल में परिवर्तन:
फसल को उगाने से लेकर कटाई तक कम से कम समय लगना आर्थिक दृष्टि से अच्छा होता है। इससे किसान खेतों में प्रतिवर्ष कई फसल उगा सकता है। यदि फसल का परिपक्वन काल कम है, तो आर्थिक दृष्टि से भी यह लाभदायक होगी। फसल समान रूप में परिपक्व होने पर कटाई के दौरान होने वाली हानि से बचा जा सकता है। अतः परिपक्वन काल परिवर्तन के लिए किस्मों में सुधार होना चाहिए। यह पूरी तरह लाभदायक है।

प्रश्न 7.
फसल उत्पादन प्रबंधन से क्या आशय है? इसके मुख्य बिन्दुओं के नाम लिखिए।

उत्तर:
फसल उत्पादन प्रबंधन:
भारतीय कृषकों के पास छोटे - छोटे खेतों से लेकर बड़े - बड़े फार्म उपलब्ध हैं। अत: विभिन्न किसानों के पास भूमि धन, सूचना तथा तकनीकी उपलब्धता इसी अनुरूप होती है। किसान अपने खेत में विभिन्न कृषि प्रणालियाँ तथा कृषि तकनीकों को अपनाता है। अतः उच्च निवेश तथा फसल उत्पादन में सहसम्बन्ध है। इस प्रकार किसान की लागत क्षमता फसल तंत्र तथा उत्पादन प्रणालियों का निर्धारण करती है। इस प्रकार उत्पादन प्रणालियाँ भी विभिन्न स्तर, जैसे - 'बिना लागत उत्पादन', 'अल्प लागत उत्पादन' तथा 'अधिक लागत उत्पादन' प्रणाली हो सकती हैं। फसल उत्पादन प्रबंधन में पोषक प्रबंधन, सिंचाई एवं फसल पैटर्न सम्मिलित हैं।

प्रश्न 8.
खाद क्या है? यह किस प्रकार उपयोगी है?
उत्तर:
खाद: यह पौधों के विभिन्न भागों, जीवांश तथा जैविक कचरे से तैयार की जाती है। खाद में कार्बनिक पदार्थों की मात्रा अधिक होती है तथा यह मिट्टी को अल्प मात्रा में पोषण प्रदान करती है। खाद मिट्टी की उर्वरकता को बढ़ाती है, साथ ही खाद में उपस्थित कार्बनिक पदार्थ मिट्टी की संरचना में सुधार करते हैं। इससे रेतीली मिट्टी में पानी को रखने की क्षमता बढ़ जाती है तथा चिकनी मिट्टी में से अधिक मात्रा में एकत्रित पानी को बाहर निकालने की प्रवृत्ति बढ़ जाती है। इसको बनाने में हम जैविक कचरे का उपयोग करते हैं, जिस कारण पर्यावरण संरक्षण में सहयोग मिलता है।

प्रश्न 9.
कम्पोस्ट तथा वर्मी कम्पोस्ट के विषय में लिखिए।
उत्तर:
कम्पोस्ट तथा वर्मी कम्पोस्ट:
कम्पोस्टीकरण प्रक्रिया में कृषि अपशिष्ट पदार्थ, जैसे - पशुधन का मलमूत्र (गोबर आदि), सब्जी के छिलके एवं कचरा, जानवरों द्वारा परित्यक्त चारे, घरेलू कचर, सीवेज कचरे, फेंके हुए खरपतवार आदि को गड्ढों में विगलित करते हैं। कम्पोस्ट में कार्बनिक पदार्थ तथा पोषक बहुत अधिक मात्रा में होते हैं कम्पोस्ट को केंचुओं द्वारा पौधों तथा जानवरों के अपशिष्ट पदार्थों के शीघ्र निरस्तीकरंरण की प्रक्रिया द्वारा बनाया जाता है। इसे वर्मी कम्पोस्ट कहते हैं।

प्रश्न 10.
हरी खाद् क्या है? यह कैसे तैयार की जाती है?
उत्तर:
हरी खाद: यह हरे पौधों को खेत में दबाकर बनाई जाती है। फसल उगाने से पहले खेतों में कुछ पौधे, जैसे - पटसन, मूँग, ग्वार, ढेंचा आदि की फसल को हल चलाकर मिट्टी में दबा देते हैं। कुछ समय पश्चात् यह खाद में बदल जाती है, जिसे हरी खाद कहते हैं। यह मृदा में नाइट्रोजन एवं फॉस्फोरस की भरपूर आपूर्ति करती है।

प्रश्न 11.
उर्वरक के विषय में लिखिए।
उत्तर:
उर्वरक व्यावसायिक रूप से तैयार पादप पोषक है। यह नाइट्रोजन, फॉस्फोरस तथा पोटैशियम प्रदान करते हैं। इनके

https://www.evidyarthi.in/

उपयोग से अच्छी कायिक वृद्धि (पत्तियाँ, शाखाएँ व फूल) होती है और स्वस्थ पौधों की प्राप्ति होती है। अधिक उत्पादन के लिए इनका उपयोग होता है, परन्तु इनका सतत प्रयोग मिट्टी की उर्वरता को घटाता है क्योंकि कार्बनिक पदार्थ की पुन: पूर्ति नहीं हो पाती तथा इससे सूक्ष्मजीवों व भूमिगत जीवों का जीवन चक्र अवरुद्ध होता है। इनकी अधिक मात्रा जल प्रदूषण को भी बढ़ाती है।

प्रश्न 12.
कार्बनिक खेती क्या है? समझाइए।
उत्तर:
कार्बनिक खेती: यह खेती करने की वह पद्धति है, जिसमें रासायनिक उर्वरक पीड़कनाशी, शाकनाशी आदि का उप्योग बहुत कम या बिल्कुल नहीं होता। इस पद्धति में अधिकाधिक कार्बनिक खाद, कृषि अपशिष्ट (पुआल तथा पशुधन) का पुनर्चक्रण, जैविक कारक जैसे कि नील हरित शैवाल का संवर्धन, जैविक उर्वरक बनाने में उपयोग किया जाता है। नीम की पत्तियों तथा हल्दी का विशेष रूप से जैव कीटनाशकों के रूप में खाद्य संग्रहण में प्रयोग किया जाता है। अतः कार्बनिक खेती सबसे सुरक्षित एवं अधिक उत्पादन देने वाली खेती है।

प्रश्न 13. खेतों में सिंचाई क्यों आवश्यक है ? हमारे यहाँ सिंचाई के क्या-क्या साधन हैं ?
उत्तर:
सिंचाई: हम जानते हैं कि अच्छी फसल प्राप्त करने के लिए समय - समय पर खेत में जल संचित करना आवश्यक है, इसी क्रिया को सिंचाई कहते हैं। हमारे यहाँ अधिकांश खेती वर्षा पर आधारित है अतः फसल की उपज समय पर मानसून आने तथा वृद्धिकाल में उचित वर्षा होने पर निर्भर करती है। कम वर्षा होने पर फसल उत्पादन कम हो जाता है, वृद्धि काल में सिंचाई नहीं होने पर भी उत्पादन प्रभावित होता है। इसलिए अधिकाधिक कृषि भूमि को सिंचित करने के लिए बहुत से उपाय किए जाते हैं। भारत में सिंचाई के लिए कुएं, नहरें, तालाब एवं नदी जल उठाव प्रणाली काम में लेते हैं।

प्रश्न 14.
सूखे से क्या आशय है? इसका क्या निवारण है?
उत्तर:
फसल में पानी की कमी अथवा वर्षा की अनियमितता के कारण सूखा होता है। इससे फसल को बहुत हानि होती है। उन किसानों को अधिक नुकसान होता है जो वर्षा पर निर्भर रहते हैं तथा सिंचाई का उपयोग नहीं करते हैं। जिन क्षेत्रों में हल्की मृदा होती है, वहाँ सूखे की संभावना अधिक है क्योंक यह मृदा पानी को संचित रखने की क्षमता कम रखती है। अत: इन क्षेत्रों में अधिक हानि होती है। सूखे से निपटने के लिए वैज्ञानिकों ने कुछ फसलों की ऐसी किस्में तैयार कर ली हैं, जो सूखे की स्थिति को सहन कर सकती हैं।

प्रश्न 15.
मिश्रित फसल से क्या आशय है? समझाइए।
उत्तर:
मिश्रित फसल:
यह अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए फसल उगाने की एक विधि है। इसमें दो या दो से अधिक फसलों को एक साथ एक ही खेत में उगाते हैं, जैसे कि गेहूँ + चना अथवा गेहूँ + सरसों अथवा मूँगफली + सूर्यमुखी। इससे हानि होने की सम्भावना कम हो जाती है क्योंकि फसल के नष्ट हो जाने पर भी फसल उत्पादन की आशा बनी रहती है।

प्रश्न 16.
फसल चक्र क्या है? इसके निर्धारण में किन - किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
उत्तर:
फसल चक्र:
किसी खेत में क्रमवार पूर्व नियोजित कार्यक्रम के अनुसार विभिन्न फसलों के उगाने को फसल चक्र कहते हैं। फसल के चुनाव में इस बात को महत्त्व दिया जाता है कि चक्रण से भूमि की उर्वरता बनी रहे। परिपक्वन काल के आधार पर विभिन्न फसल सम्मिश्रण के लिए फसल चक्र अपनाया जाता है। एक कटाई के बाद कौन सी फसल उगानी चाहिए, यह नमी तथा सिंचाई की उपलब्धता पर निर्भर करता है। यदि फसल चक्र उचित ढंग से अपनाया जाए तो एक वर्ष में दो या तीन फसलों से अच्छा उत्पादन किया जा सकता है।

प्रश्न 17.
खरपतवार क्या है ? ये पौधों को कैसे हानि पहुँचाते हैं ?
उत्तर:
खरपतवार:
कृषि योग्य भूमि में कृषि के साथ अनावश्यक पौधे पैदा हो जाते हैं, जैसे - गोखरू, गाजर घास आदि। इन्हें खरपतवार कहते हैं।
खरपतवार मुख्य फसली पादपों के साथ भोजन, स्थान तथा प्रकाश के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। इसका आशय है ये मुख्य पादपों का भोजन, स्थान, प्रकाश आदि का उपयोग स्वयं कर लेते हैं। ये वृद्धिकारक पोषकों का भी उपयोग कर लेते हैं, जिससे मुख्य फसल इससे प्रभावित होती है तथा उत्पादन कम हो जाता है।

प्रश्न 18.
कीट - पीड़क फसल को कैसे नुकसान पहूँचाते हैं? पादप रोग के कारकों के नाम लिखिए।
उत्तर:
कीट: पीड़क फसल के पौधों को तीन प्रकार से नुकसान पहुँचाते हैं।

1. ये मूल, तने तथा पत्तियों को काट देते हैं।
2. ये यौधों के विभिन्न भागों से कोशिकीय रस चूस लेते हैं।
3. ये तने तथा फलों में छिद्र कर देते हैं।

इस प्रकार ये फसल को नष्ट कर देते हैं। इससे उत्पादन कम हो जाता है। पौधों में रोग - बैक्टीरिया, कवक तथा वायरस जैसे रोगकारकों द्वारा होता है। ये मिट्टी, पानी तथा वायु में उपस्थित रहते हैं।

प्रश्न 19.
खरपतवार नियंत्रण के उपाय लिखिए।
उत्तर:
खरपतवार नियंत्रण के लिए निम्न चार विधियाँ अपनाई जाती हैं।

https://www.evidyarthi.in/

1. यांत्रिक नियंत्रण: काटकर हटाना, गाड़ देना, सुखी देना, रेचन कर समाप्त करना, अत्यधिक भृद्धि देकर समाप्त करना।
2. जैविक नियंध्रण: खरपत्तवार को नुकसान पहुँचाने वाले जीबों का परिवर्धम करमा।
3. रासायनिक नियंत्रण: स्पर्श द्वारा (चयनित व अचयनित), वृद्धि नियत्रको द्वारा, मृदा का जावराहत करक।
4. संवर्ध नियंत्रण: फसल प्रतिस्पर्धा, फसल चक्र अपनाना, आग द्वारा जलाना।

प्रश्न 20.
कीट तथा रोग नियंत्रण कैसे करते हैं? इसमें क्या कठिनाई सामने आती है?
उत्तर:
कीट तथा रोग नियंत्रण के लिए सामान्यतया पीड़कनाशी रसायनों का उपयोग किया जाता है। इसमें शाकनाशी, कीटनाशी तथा कवकनाशी आते हैं। इन रसायनों को फसल के पौधों पर छिड़कते हैं अथवा बीज और मिट्टी के उपचार के लिए उपयोग करते हैं। लेकिन इनके अधिकाधिक उपयोग से बहुत सी समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं, जैसे कि ये कई पौधों व जानवरों के लिए विषैले हो सकते हैं और पर्यावरण प्रदूषण का कारण बन जाते हैं।

प्रश्न 21.
अच्छे पशुपालक द्वारा पशुओं के स्वास्थ्य तथा उनके आवास की देखरेख में क्या - क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए?
उत्तर:
पशुओं के स्वास्थ्य तथा उनके आवास की देखरेख के लिए निम्न सावधानियाँ रखनी चाहिए।

1. इसके शरीर की उचित सफाई आवश्यक है। शरीर पर झड़े हुए बाल तथा धूल को हटाने के लिए नियमित रूप से पशु की सफाई करनी चाहिए।
2. पशुओं का आवास छतदार एवं रोशनदान युक्त होना चाहिए। ऐसा आवास उन्हें वर्षा, गर्मी तथा सर्दी से बचाता है।
3. आवास का फर्श ढलवां होना चाहिए, जिससे वह साफ व सूखा रहे।

https://www.evidyarthi.in/